शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन पर व्यक्तित्व और निवास पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन

डॉ.राघवेन्द्र कुमार हुरमाड़े
दीपिका हुरमाड़े, एम.एड
शिक्षा अध्ययनशाला,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय.,
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

प्रस्तुत शोध "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन पर व्यक्तित्व व निवास पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन" शीर्षक पर किया गया है। शोध हेतु न्यादर्ष के रूप में इन्दौर जिले के चार उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9वीं व 10वीं के 60 विद्यार्थियों का सोद्देष्य न्यादर्ष तकनीक से चयन किया गया। प्रदत्त संकलन हेतु डाॅ. ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित 'समायोजन अनुसूची' तथा आइजंक द्वारा निर्मित माड्स्ले व्यक्तित्व अनुसूची (1959) के भारतीय अनुकूलन (जलोटा व कपूर, 1965) का उपयोग किया गया। प्रदत्त विश्लेषण हेतु एक मार्गीय प्रसरण विश्लेषण एवं स्वतंत्र टी-परीक्षण का उपयोग किया गया।

परिचय

समायोजन मानव जीवन की एक आवश्यक प्रक्रिया है। व्यक्ति को अपने घर, परिवार, समाज व कार्यस्थल आदि के वातावरण में समायोजन करना होता है, ताकि उसका जीवन समस्या रहित हो सके। व्यक्ति चाहे वह बालक, प्रौढ़ या वृद्वावस्था का प्रतिनिधित्व करता हो, वह अपने जीवन में कुछ लक्ष्य अवष्य निर्धारित करता है, उसकी कुछ आवश्यकताएँ होती है। व्यक्ति अपने इन लक्ष्यों की प्राप्ति अथवा आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रयास करता है। कई बार उसे वांछित परिणाम प्राप्त होते हैं तथा व्यक्ति उनसे संतुष्ट होकर उस वातावरण से सामंजस्य स्थापित कर लेता है। किन्तु कई बार प्रयासों की कमी अथवा वातावरणीय बाधाओं के कारण व्यक्ति लाभ प्राप्ति में असफल रहता है। कई बार वह इन असफलताओं को स्वीकार कर समायोजन कर लेता है, किन्तु कभी-कभी वह इन्हें स्वीकार नहीं करता और वह संबंधित वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता। जिसके कारण व्यक्ति को कई बार संवेगात्मक समस्याओं का सामना करना होता है। अतः उसे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के दौरान किसी न किसी प्रकार से समायोजन करना आवश्यक है, ताकि उसे कम से कम समस्याओं का सामना करना पडे। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के भी अपने कुछ लक्ष्य होते हैं, कुछ आवश्यकताएँ होती है, जिनकी पूर्ति के दौरान उन्हें समायोजन की प्रक्रिया से गुजरना होता है। विद्यार्थियों के समायोजन को कई कारक प्रभावित करते हैं, जैसे- परिवार का वातावरण, सामाजिक-आर्थिक स्तर, निवास पृष्ठभूमि, परिवार के सदस्यों से संबंध, बुद्धि, व्यक्तित्व, विद्यालय का वातावरण, षिक्षकों से संबंध आदि। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों

के समायोजन पर उनके व्यक्तित्व व निवास पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

औचित्य

विद्यार्थी जीवन की सफलता या असफलता विद्यार्थी के समायोजन पर निर्भर करती है। यदि बालक समायोजित है तो उसकी उपलब्धियाँ असमायोजित बालकों की तुलना में श्रेष्ठ होने की अधिक संभावना होती है, क्योंकि समायोजित विद्यार्थी में असमायोजित विद्यार्थी की तुलना में चिन्ता, तनाव व कुण्ठा कम होती है। विद्यालय में अंतर्मुखी, बहिर्मुखी व उभयमुखी तीनों व्यक्तित्व के विद्यार्थी होते हैं। बहिर्मुखी विद्यार्थी मिलनसार होते हैं, आसानी से मित्रता कर लेते हैं तथा वे अपनी बात दूसरों के समक्ष आसानी से रख सकते हैं। वहीं अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थी ना अधिक मिलनसार होते हैं, ना ही आसानी से मित्रता करते हैं। अतः इनके गुणों में इन भिन्नताओं के कारण यह जानना आवश्यक है कि, किस प्रकार के व्यक्त्त्वि का समायोजन बेहतर होता है।

इसी प्रकार ग्रामीण पृष्ठभूमि में रहने वाले विद्यार्थी प्रायः संयुक्त परिवार में रहते हैं, साथ ही ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़े होने के कारण विद्यार्थी, जीवन के वास्तविक अनुभवों को अधिक करीब से देखते व समझते हैं। वहीं शहरी पृष्ठभूमि में रहने वाले विद्यार्थी अधिकांशतः एकल परिवार से ताल्लुक रखते हैं तथा सर्वसुविधा युक्त शहरी वातावरण में लालन-पालन होने के कारण जीवन की कई समस्याओं से अनभिज्ञ रहते हैं। अतः इनके गुणों में इन भिन्नताओं के कारण यह जानना आवश्यक है कि, ग्रामीण व शहरी पृष्ठभूमि में रहने वाले विद्यार्थियों में से किनका समायोजन बेहतर होगा। प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया कि, क्या व्यक्तित्व समायोजन को प्रभावित करता है? क्या निवास पृष्ठभूमि समायोजन को प्रभावित करती है?

समायोजन, व्यक्तित्व एवं निवास पृष्ठभूमि से संबंधित अग्र अनेक शोधकार्य हुए है'- साठे (1973) ने विशिष्ट बालकों के समायोजन, रुचि, व्यक्तित्व व सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन, गोयल (1978) ने अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की विद्यालयीन समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, गुप्ता (1978) ने बुद्धि, लिंग व सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संबंध में व्यक्तित्व व समायोजन का अध्ययन, सुल्ताना व अन्य (1981) ने ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व समायोजन का अध्ययन, गायकवाड़ (1988) ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का माता के वैवाहिक समायोजन व उसके पालन-पोषण के सन्दर्भ में अध्ययन, प्रकाश(1993)ने विभन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक-परिपक्वता व समायोजन का अध्ययन, ठक्कर (2003) ने ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि व समायोजन का अध्ययन, सिंह (2005) ने ग्रामीण व शहरी महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के समायोजन के तरीकों का अध्ययन एवं हुरमाड़े (2005) ने इन्दौर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर के आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन, व्यक्तित्व तथा बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया।

उपर्युक्त सम्बन्धित साहित्य के सूक्ष्म अवलोकन से विदित होता है कि, वर्तमान तक व्यक्तित्व, समायोजन व निवास पृष्ठभूमि से संबंधित कई शोध कार्य हो चुके हैं, किन्तु "माध्यमिक स्तर के

विद्यार्थियों के समायोजन पर व्यक्तित्व व निवास पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन" शीर्षक के अंतर्गत वर्तमान तक शोधकर्ता द्वारा कोई शोध कार्य नहीं पाया गया। अतः प्रस्तुत शोध कार्य की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

समस्या कथन: प्रस्तुत शोध की समस्या निम्न थी-

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन पर व्यक्तित्व व निवास पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन

उद्देश्य : प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित थे-

1 माध्यमिक स्तर के अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी व उभयमुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों के समायोजन माध्य फलांकों की तुलना करना।

2 माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के समायोजन माध्य फलांकों की तुलना करना।

परिकल्पना: प्रस्तुत शोध की निम्न शून्य परिकल्पनाएँ थीं-

1 माध्यमिक स्तर के अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी व उभयमुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों के समायोजन माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

2 माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के समायोजन माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

न्यादर्श :

प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श के रूप में माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश से सम्बन्धित इन्दौर जिले के एक शहरी (न्यू पिंक फ्लावर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इन्दौर) तथा एक ग्रामीण (शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खुड़ैल) क्षेत्र से सम्बन्धित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9वीं व 10वीं के 60 विद्यार्थियों का सोद्देश्य न्यादर्श तकनीक से चयन किया गया। इन विद्यार्थियों में छात्र-छात्राएँ दोनों शामिल थे तथा ये 13-16 आयु वर्ग के थे।

उपकरण : प्रस्तुत शोध कार्य में निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया-

समायोजन

विद्यार्थियों के समायोजन का आकलन करने हेतु डॉ. ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित 'समायोजन अनुसूची' का उपयोग किया गया। यह अनुसूची वस्तुनिष्ठ प्रकार की है। इस अनुसूची के माध्यम से 11 वर्ष से अधिक उम्र के बालक-बालिकाओं के समायोजन का आकलन किया जाता है। अनुसूची में 60 कथन है। इसका अर्ध विच्छेद विधि से विष्वसनीयता गुणांक 0.05 है।

व्यक्तित्व

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आकलन हेतु आइजंक द्वारा निर्मित माड्स्ले व्यक्तित्व अनुसूची (1959) के भारतीय अनुकूलन (जलोटा व कपूर, 1965) का उपयोग किया गया। यह अनुसूची 15 व उससे अधिक उम्र के व्यक्तियों के व्यक्तित्व आकलन हेतु मानकीकृत है। अनुसूची में कुल 48 पद हैं। प्रत्येक पद में तीन विकल्प दिए है- 'हाँ', '?' व 'नहीं'। प्रत्येक पद में बहिर्मुखी व अन्तर्मुखी के निम्न से उच्च स्तर के लिए 0, 1 एवं 2 अंक प्रदान किए जाते हैं। प्राप्त कच्चे फलांकों को मानक तालिका में दिए मानक फलांकों में परिवर्तित कर व्यक्तित्व के पक्ष की पहचान की जाती है। अर्द्धविच्छेद विधि द्वारा अनुसूची की विष्वसनीयता, बहिर्मुखी हेतु .358 तथा अन्तर्मुखी हेतु .567 प्राप्त की गई है।

प्रदत्त संकलन विधि:

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रस्तुत शोध में प्रदत्त संकलन हेतु सर्वप्रथम सम्बन्धित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्राचार्यों से संपर्क कर, उन्हें शोध के उद्देश्यों से अवगत कराकर प्रदत्त संकलन की अनुमति प्राप्त की गई। तत्पश्चात विद्यार्थियों से संपर्क कर उन्हें भी शोध के उद्देश्यों से अवगत कराया गया व शिक्षक की सहायता से प्रदत्त संकलन हेतु दिनांक तय किया गया। तय दिनांक को विद्यार्थियों से संपर्क कर उन पर व्यक्तित्व के आकलन हेतु 'माड्स्ले व्यक्तित्व अनुसूची' तथा समायोजन के आकलन हेतु डॉ.ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित 'समायोजन अनुसूची' प्रशासित की गई। परीक्षणों के प्रशासन से पूर्व शोधकर्ता द्वारा विद्यार्थियों को परीक्षणों से संबंधित आवश्यक जानकारी प्रदान की गई।

प्रदत्त विश्लेषण : प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों के अनुसार प्रदत्त विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यकीय तकनीकों का उपयोग किया गया-

1.माध्यमिक स्तर के अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी व उभयमुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों के समायोजन माध्य फलांकों की तुलना करने हेतु एक मार्गीय प्रसरण विश्लेषण का उपयोग किया गया।

2.माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के समायोजन के माध्य फलांकों की तुलना करने हेतु स्वतंत्र टी-परीक्षण का उपयोग किया गया।

परिणाम एवं विवेचना: नीचे उद्देश्यों के अनुसार परिणाम एवं विवेचना प्रस्तुत की गई है-

1.माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन पर उनके व्यक्तित्व के प्रकारों के प्रभाव

प्रस्तुत शोध का प्रथम उद्देश्य "माध्यमिक स्तर के अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी व उभयमुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों के समायोजन माध्य फलांकों की तुलना करना" था। इस उद्देश्य हेतु प्रदत्त संकलन के पश्चात् एक मार्गीय प्रसरण विश्लेषण की सहायता से प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया। प्रदत्त विश्लेषण से प्राप्त परिणाम तालिका-1 में प्रदर्शित किए गए हैं-

तालिका-1: विद्यार्थियों के समायोजन हेतु एक मार्गीय प्रसरण विश्लेषण का सारांश

विचरण के स्त्रोत	Df	SS	MSS	Fमूल्य
व्यक्तित्व	2	226.257	113.13	2.40
त्रुटि	57	2685.07	47-11	
योग	59	2911.33		

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि, व्यक्तित्व के लिए F का मूल्य 2.40 है, जो कि df (2,59) के लिए सार्थकता के स्तर .05 पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना कि, "माध्यमिक स्तर के अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी व उभयमुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों के समायोजन माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा" निरस्त नहीं की जाती है। अर्थात् कहा जा सकता है कि अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी व उभयमुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों का समायोजन लगभग समान पाया गया। इसका कारण हो सकता है कि, अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी व उभयमुखी तीनों ही विद्यार्थी, परिस्थितियों या वातावरण के अनुसार स्वयं को समायोजित कर लेते हो।

2.शहरी व ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के समायोजन के माध्य फलांकों की तुलना

प्रस्तुत शोध का द्वितीय उद्देश्य ''माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के समायोजन के माध्य फलांकों की तुलना करना था। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु

प्रदत्त संकलन के पश्चात् स्वतंत्र टी-परीक्षण की सहायता से प्रदत्त विश्लेषण किया गया। प्रदत्त विश्लेषण से प्राप्त परिणाम तालिका-1 में प्रदर्शित किए गए हैं-

तालिका-2: निवास पृष्ठभूमि N, df, Mean, SD एवं टी-मूल्य

निवास पृष्ठभूमि	N	Df	Mean	SD	t-Value
ग्रामीण	32	58	52.59	6.63	1.50
शहरी	28		49.89	7.30	

तालिका-2 से स्पष्ट है कि, ग्रामीण विद्यार्थियों का समायोजन माध्य फलांक 52.59 तथा शहरी विद्यार्थियों का समायोजन माध्य फलांक 49.89 प्राप्त हुआ। ग्रामीण व शहरी निवास पृष्ठभूमि हेतु t-.मूल्य 1.5 प्राप्त हुआ है, जो कि df (58) के लिए सार्थकता स्तर 05 पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना कि, "माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के समायोजन माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा" निरस्त नहीं की जाती है। अर्थात् कहा जा सकता है कि, शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों का समायोजन लगभग समान पाया गया। इसकी पुष्टि प्रकाश(1993),ठक्कर (2003) व सिंह (2005) के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष से होती हैं। इसका सम्भावित कारण हो सकता है कि, इस विज्ञान व तकनीकी युग में शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों को उनके विद्यालय, परिवार व समाज में एक जैसा वातावरण प्रदान किया जा रहा हो।

निष्कर्ष

1.उच्चतर माध्यमिक स्तर के अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी व उभयमुखी विद्यार्थियों के समायोजन माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

2.माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण निवास पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के समायोजन माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 चौबे, एस.पी. (1990). शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर.

2 तिवारी, ए.एन., (1974). शिक्षा मनोविज्ञान भाग-2. लखनऊ: उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी.

3 पाल, एच.आर., (2004). शैक्षिक शोध. भोपाल: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी.

4 पाल, एच.आर., (2006). प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान. नई दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय.

5 बिष्ट, ए., (1997). प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर.

6 भटनागर, एस. (1994). शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठ: इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस.

7 वर्मा, पी. एवं अन्य, (1996). आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर.

Buch, M.B. (ed.) (1991). Forth Survey of Research in Education. Vol I & II, New Delhi : National Council of Educational Research & Training .

Chauhan, S.S.(1998). Advanced Educational Psychology. New Delhi: Vikas Publishing House Pvt. Ltd.

NCERT, (1997).Fiftth Survey of Research in Education. Vol. I, New Delhi: National Council of Educational Research & Training.

NCERT, (2000). Fifth Survey of Research in Education. Vol. II, New Delhi: National Council of Educational Research & Training.

NCERT, (2006). Sixth Survey of Research in Education. Vol. I, New Delhi: National Council of Educational Research & Training.

NCERT, (2007). Sixth Survey of Research in Education. Vol. II, New Delhi: National Council of Educational Research & Training.

Rao, S.N. (1990). Educational Psychology. New Delhi: Wiley Eastern Ltd.

Sansanwal, D.N.(ed)(2008). Sixth Survey of research in Education (1993-2005). http://www.eduresearch.ac.in.

http://shodhganga.inflibnet.ac.in/